International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(1): 452-455

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(1): 452-455
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 13-11-2020
Accepted: 24-12-2020

ऋचा
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
ऋचा
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली, भारत

मुग़ल आश्रय में प्रणीत पद्मसागरगणि के जगद्गुरुकाव्य में मुग़ल सम्राटों के ऐतिहासिक संदर्भ

ऋचा

प्रस्तावना

पद्मसागरगणि द्वारा विरचित जगद्गुरुकाव्य श्री यश विजय जैन ग्रन्थमाला भाग १४ में प्रकाशित जगद्गुरुकाव्य पद्मसागरगणि द्वारा विरचित है, तथा इसका सम्पादन विजयधर्मसूरि के शिष्य पं. हरगोविन्ददास और बेचरदास द्वारा किया गया है जो कि चन्द्रप्रभ प्रेम द्वारा प्रकाशित किया गया।

इस खण्डकाव्य के कर्त्ता पद्मसागरगणि हैं जो जैनों में अत्यन्त ख्यातिलब्ध हैं। इनका समय अकबर और हीरविजयसूरि के समकालिक है यह ग्रन्थ के अन्तः साक्ष्यों से निः सन्दिग्ध होता है। जैसा कि इन्होंने कहा है-

चक्रे शास्त्रमिदं यत्नात् त्रयग्निषट्चन्द्रवत्सरे।
पद्मसागरसंज्ञेन बुधेन स्वात्मबुद्धये।। [1]

इस प्रकार इस श्लोक के ऊपर लिखी गयी टीका में पदम् सागरगणि ने यह स्पष्ट किया है। पद्मसागरगणि के द्वारा अन्य ग्रन्थों का भी प्रणयन किया गया। यथा- शीलप्रकाश- युक्तिप्रकाश- तट्टीका-श्री उत्तराध्ययन कथासंग्रह इत्यादि

श्रीमद्योधपुरेश्वरो मरूपतिदुर्वारवीरावृतः।।४५।।

पद्मसागरगणि प्रस्तुत काव्य में अनेक ऐतिहासिक पक्षों का वर्णन् करते हैं, इसी श्रृंखला में अकबर के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए वे लिखते हैं, कि एक अत्यन्त प्रकृष्ट वीरों के निवासयोग्य खुरासान देश के निकट काबिल नाम की नगरी है जिसमें मुद्गललक्ष (लाखों मुगलों से युक्त) लक्षसंख्या परिमित अक्षत बलवाले हुमायूं नाम का नृपति जो शत्रुओं के लिए साक्षात् विष्णु के समान युद्ध में लोगों को तपाने वाला है। जिसके घोड़े राक्षस के समान लम्बी गर्दनों के कारण पर्वत के समान ऊँचे शिरस्फालन के कारण बड़े-बड़े हाथियों को भी डरा देने वाले हैं। [2] एकबार उसने अपने अष्टवर्षीय पुत्र अकबर को राज्याभिषिक्त कर स्वयं पृथ्वी को जीतने के लिए निकल पड़ा। समुद्रपर्यन्त प्रलयसमुद्ररुपी अपनी सेना के साथ दिल्ली, नामक नगर के किले में रहने लगा। [3]

इस प्रकार से पद्मसागरगणि इतिहास के अनेक पक्षों पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं कि वहीं नौ लाख घुड़सवारों वाले तथा चौबीस हजार मत्त हाथियों वाले जिन्होंने राष्ट्रकूट कुल में उत्पन्न श्रीमल्लदेव को जीत लिया ऐसे अजयेवीरों से युक्त मरूपति जोधपुरेश्वर हुए। [4]

उस वीर राजा के लिए उस मुगल सम्राट हुमायूं ने दूत भेजा जिसने जोधपुरेश्वर को जाकर कहा या तो हुमायूं नृपति के चरणों में प्रणाम करो या तो दिल्ली के सम्राट से युद्ध के लिए तैयार हो जाओ या तो यहाँ से भाग जाओ। [5] इस प्रकार के दूत के काव्यों को सुनकर अतिगर्वपूर्वक उस वीर नृपति ने कहा कि मेरे सामने यह बनिया हुमायूँ नृपति कौन है। हे दूत तुम जाकर मेरे वाक्यों से अपने स्वामी से यह कह दो कि युद्ध के लिए तैयार हो जाये, ऐसा कहकर दूत को उधर से मैं आ रहा हूँ गलहस्त उतारकर उस वीर राजा ने दे दिया। [6]

इधर दूत के वचनों को सुनकर हुमायूं भी युद्ध के लिए तैयार हो गया। उधर नगाडे बजाते हुए विभिन्न अस्त्रों से सुसज्जित सेना के साथ मुगलों की सेना को तिनके के समान समझकर मत्त हाथियों के साथ घण्टा बजाते हुए चला। हुमायूँ ने भी युद्ध भूमि में आये हुए राजा को देखकर अपने दो हजार वीरों को आज्ञा दिया। जिस प्रकार से तिनके के ढेरों को दो ही तीन अग्नि के कण क्या नहीं जला देते? ऐसा सोचकर वह युद्ध के लिए उद्यत हुआ। [7]

पद्मसागरगणि हुमायूं की सेना और जोधपुरेश्वर की सेना की तुलना अनेक उपमानों से करते हैं क्योंकि जोधपुरेश्वर की सेना नौ लाख थी और हुमायूँ की सेना मात्र दो हजार थी। पद्मसागर गणि के इस तथ्य को मात्र काव्यात्मक स्वीकार करना चाहिए अर्थात् उनका आशय जोधपुरेश्वर की सेना की तुलना कर हुमायूँ की सेना से अल्पता द्योतित करना था। वे कहते हैं कि दो तीन सिंह के बच्चे अनेकों हाथियों के गर्व को दूर करने में समर्थ होते हैं। अमृत की दो चार बूंदे असाध्य रोगों को दूर करने में समर्थ होती है। [8]

अपने सैनिकों को आकुल देखकर शीघ्र ही वह शूर राजा (जोधपुरेश्वर) संग्राम में सामने आकर अपने हाथियों के समूह से शत्रु की सेना को तितर-बितर कर दिया और प्रियतमा के कटाक्षों के समान बाणों के समूहों से मारते हुए उस दो हजार की सेना को शस्त्र छोड़कर भागने के लिए विवश कर दिया। [9] यह सब देखकर हुमायूं सामने आया और अपनी सेना का पुनः उत्साह वर्धन कर पुनः युद्ध करने लगा पद्मसागरगणि इसे आदित्य और राहु के युद्ध की उपमा देते हैं। [10] अन्त में हुमायूं की विजय हुयी। हुमायूँ की आज्ञा से उसके सैनिकों ने लूटपाट किया और जो कुछ भी हाथी, घोड़े हीरे जवाहरात इत्यादि मिला उसे हरण कर लिया। राजा (जोधपुरेश्वर) के नष्ट हो जाने पर उसकी सेना को अपनी सेना में हुमायूँ ने मिला लिया तथा वहाँ के निवासियों को अभय देकर उस राज्य को अपने साम्राज्य में मिला लिया। [11]

पद्मसागरगणि हुमायूँ के अन्य युद्धों का भी वर्णन करते हैं इस श्रृंखला में गुजरात के बहादुरशाह के साथ हुमायूँ के युद्ध के प्रसंग को उठाते हुए पद्मसागर लिखते हैं। इसी समय गुर्जरमण्डल में बादर नाम का अनेक हाथियों के बल से युक्त छः लाख सेना वाला राजा था। जिसने अनेक मालव और दक्षिण के समुद्रतटीय राजाओं को जीत लिया था। [12] एक बार उसने चित्तौड़ के राजा रत्नसिंह को युद्ध में जीतकर उनके नगर को विध्वंस कर दिया तथा वहाँ की क्षत्रिय कन्याओं ने अग्नि में प्रवेशकर के जौहर कर लिया। [13]

इस दुःख से अत्यन्त दुखी होकर राजा रत्नसिंह ने हुमायूँ से यह प्रार्थना की कि हे राजन्। इस अन्यायी बादर नामक राजा को बांधकर मेरी सहायता करें क्योंकि आप यह करने में सक्षम है। यद्यपि पद्मसागरगणि का यह उल्लेख इतिहास से किंचित् अलग है जहाँ पर रानी कर्णावती जो कि राणासांगा की पत्नी थी उन्होंने पत्र लिखा था। तथा कुछ इतिहासकारों के मत में हुमायूँ और बहादुरशाह के बीच कूटनीतिक पत्रव्यवहार किया जिससे हुमायूं ने जानबूझकर जाने में देरी की किन्तु [14] बाद में उन दोनों में मतभेद हो गया। यहाँ पर पद्मसागरगणि कहते हैं कि रत्नसिंह की प्रार्थना को सुनकर वह काबिलपति हुमायूं बादर राजा को पकड़ने के लिए कवच इत्यादि पहनकर वहाँ से चला गुजरात के सैनिकों को तृण के समान समझते हुए तथा अपने भुजाओं के बल से ब्रह्मा, विष्णु, महेश से भी अधिक कल्पित करता हुआ वह गुजरात की ओर बढ़ा। [15]

जब तक दिल्ली पति हुमायूँ चित्तौड़ के पास पहुँचा तब तक बादर अर्थात् बहादुरशाह अपनी सेना लेकर वहाँ से भाग गया। तथा मालामण्डल में स्थित अत्यन्त गहन स्थान पर विद्यमान मण्डप (माण्डू) नामक दृढ़दुर्ग में अपने युद्ध की तैयारी करने लगा। उसको भागा हुआ जानकर हुमायूँ मालव की ओर चल दिया क्योंकि यमराज के लिए मालव कितनी दूर है। दृष्टान्त दिया गया माण्डू के दुर्ग को घेरकर दिल्ली पति ने वही स्थिति पैदा कर दी जिस प्रकार कोई समुद्र अपने टापू को अपने तरंग से ढक लेता है। [16] इसके उपरान्त पद्मसागरगणि अनेक श्लोकों में बादर के भागने एवं हुमायूं के पीछा करने का वर्णन करते हैं। माण्डूगढ़ से भागकर बादर अर्थात् बहादुरशाह पावागढ़ जाता है वहाँ से भी भागकर वह स्तम्भतीर्थ अर्थात् खम्भात जाता है। [17]

अन्त में बहादुरशाह समस्त धन को समुद्र तटपर छोड़कर दूसरे द्वीप पर भाग जाता है और हुमायूं की विजय हो जाती है तथा उसे समस्त धन प्राप्त हो जाता है। [18] इस प्रकार से

बादर अर्थात् बहादुरशाह को जीते हुए मरा मानकर उसको पकड़ने की इच्छा हुमायूं ने छोड़ दी। पद्मसागरगणि यहाँ उपमान देते हुए कहते हैं कि

यहाँ नीचे गिरे हुए तृण को अत्यन्त उद्धत वायु नहीं तोड़ती तथा फैले हुए वृक्षों के समूहों को नष्ट कर देती है। [19]

अपने योद्धाओं से सम्पूर्ण गुर्जरमण्डल में अपनी आज्ञा तथा कीर्ति को इस प्रकार उसने आरोपित किया। जिस प्रकार कोई सद्वस्तु दान करने के लिए, उद्यत कोई प्राणी अपने पापों को धोकर निर्मल हो जाता है, उसी प्रकार समुद्र के जल में वह अपने शास्त्रों को धोकर निर्मल हो गया।

इस प्रकार गुर्जर मालव आदि महादेशों में सुव्यवस्था बनाकर मुगल सम्राट् सौ गुना लक्ष्मी के साथ दिल्ली आ गया। वहाँ पर उसने एकछत्र निष्कंटक राज्य किया पद्मसागरगणि कहते हैं कि पुण्यों के जागृत होने पर किसको अपनी वांछित वस्तुएँ प्राप्त नहीं होती। [20]

कुछ दिन बाद अचानक एकबार पर्वत के समान उस ऊँचे महल पर चढ़कर हुमायुं अपने विशालनगर को देखकर हृदय और आँखों से प्रसन्न हो रहा था, तभी अचानक मानो विधाता ने यह सोचा कि कहीं यह मेरे समान न हो जाए। इस प्रतिस्पर्धा के कारण उसकी इच्छा से अचानक हुमायूं को चक्कर आ गया और नीचे गिरकर उसकी मौत हो गयी। [21] यद्यपि कई इतिहासकारों ने हुमायूं की मृत्यु के कारण सीढ़ियों से गिरना बताया है। कहते हैं कि हुमायुं के मरने के बाद १५ दिन तक लोगों को पता ही नहीं चलने दिया कि हुमायुं की मृत्यु हो गयी क्योंकि लोगों में विद्रोह हो जाने का डर था। इसलिए पंजाब के गुरुदासपुर में ही कलानौर गाँव में अकबर का राज्याभिषेक किया गया।

हुमायुं की मृत्यु से सभी मुगल सेना में भय व्याप्त हो गया। सूर्य के अस्त हो जाने पर सारे वीर खद्योत के समान प्रतीत हो रहे थे। क्योंकि बिना नायक के जय मिलना सम्भव कहाँ। [22]

अपने पिता की मृत्यु का समाचार प्राप्त हुआ उसे यह भी पता चला कि हमारी सेना को अन्य आक्रान्ताओं द्वारा त्रासित किया जा रहा है। तथा लुटेरों के उदय के बारे में पता चला। [23] अपने कुल के अनुसार कुछ देर शोक करके काबुल के पाँच सौ सैनिकों के साथ शीघ्र ही वह नगर में आ पहुँचा।

जिस पृथ्वी पर अकबर ने विजय प्राप्त की उस पर यवनभाषा नाम वाले फतेपुर बसाया जिस प्रकार से कृष्ण ने द्वारिका में बसाया था। पद्मसागरगणि में कहते हैं कि राजाओं की यह परम्परा है कि जहाँ पर वह जीतते हैं वही अपने नये राज्य की स्थापना करते हैं। [24] वहीं पर बादशाह अकबर विजय पाकर व्यापारी वर्ग से युक्त फतेपुर नामक सुन्दर नगरी में राज्य करने लगा। वहाँ पर चारों वर्णों के लोगों के घर ये जैनमन्दिर थे तथा षड्दर्शनों के मठ भी थे सूफियों के दखेश तथा मुगलों के बड़े-बड़े महल थे। [25]

इस प्रकार हम देख सकते हैं की पद्म सागर गणि न केवल एक संस्कृत विद्वान् अपितु एक महान् इतिहासकार भी थे, जैसा कि इनके महाकाव्य अनुशीलन से स्पष्ट होता है।

सन्दर्भ

1. जग.का., श्लोक-४
2. आसीत्तत्र हमाउनामनृपतिर्दैत्यावतारोऽरिषु म्लेच्छानामधिपः प्रतापतपनश्चक्रीव युद्धे जयी। यस्याश्वा इव राक्षसा गिरिशिरःस्फालः प्रलम्बानना स्त्रासं हस्तिवरानपीवरानपीव महिषान्नित्यं नयन्ति क्षणात्।।जग.का.श्लो.४३
3. अन्येद्युः स सुतेऽष्टवर्षवयसि स्पष्टोदयेऽकब्बरा भिख्ये राज्यभरं निवेश्य चलितः कर्तु महीमात्मसात्। अब्ध्यन्तां प्रलयाब्धिसैन्यकलितस्तावत् समेतः पुरे दिल्लीनाम्नि भटालिदुर्घटतटे कोटीश्वराभ्याश्रिते। जग.का.श्लो.४४
4. तत्राभून्नवलक्षवाजिसुभटः सूरः प्रतिष्ठानपो मतेभद्विचतुः सहस्रगुणनः कोट्युग्रपत्तीश्वरः। युद्धे येन च राष्ट्रकूटकुलभूः श्रीमल्लदेवो जितः। ज.का.श्लो.४५
5. तस्मै सूरनरेश्वराय निपुणं दूतं तदा प्राहिणो च्छ्रीमन्मुद्गलनायकः परिसरे स्थित्वा सुनीति वहन्। दूतोऽप्याऽऽख्यमिदं हमाउनृपतेः पादप्रणामं कुरू श्रीदिल्लीश! भवाहवायं सुतरां सज्जोऽथवेतो व्रज।। ज.का.श्लो. ४५
6. श्रुत्वा दूतवचोऽवदन्नरपतिः सूरोऽतिगर्वाद्वुरः कोऽयं मत्पुरतो हमाउनृपतिर्वाणिज्यकृद्भम्भ्रमी। दत्वाऽश्वांश्चिरसंचितान्मणिगणान् स्वर्णं च रुप्यं वशा वीराणां च शिरांरि यास्यति वपुःशेषः सुशेपीभवन्।। ज.का.श्लो.४६
7. सङ्ग्रामाङ्गणमाग्रत क्षितिपति दृष्ट्वा हमाऊमृप स्तं वीरान् द्विसहस्रमानगणितान युद्धार्थआज्ञापयता। प्राज्यान यन्तृणपूलकान् शिखिकणा द्विता न किं भस्मय न्त्येवं चेतसि चिन्तचन्निजबलस्कन्धे स्थितः सोद्यमः। ज.का.श्लो.५१
8. तावद्भिः सुभटैर्घनैरिव भृशं बाणाम्बुधारोच्चयान्। वर्षद्भिर्नवलक्षसैन्यमसमं चक्रे विवद्याकुलम्। द्विन्नाः किं न मृगारिमत्तशिशव कोटीभदर्पापहा द्विन्ना वामृतबिन्दवः पृथुतराऽसाध्यैकरोगापहाः।। ज.का. श्लो.५२
9. तैः सैन्यं निजमाकुलं कृतमिदं वीक्ष्याशु सूरो नृपः सङ्ग्रामाभिमुखोऽभवद्वद्रजघटाध्यास्फालितारिव्रजः।।

निहनन् बाणगणैरलक्ष्यच्चरितैः कान्ताकटाक्षैरिव व्यक्तास्त्रं द्विसहस्रमानगणितं सैन्यं चकारानुगतम्।ज.का.श्लो.५३
10. श्रीसूरोऽपि हमाउरप्यभिमुखं वीरैर्निजैर्वोष्टितौ। कुर्वाणाविव युद्धमुद्धतभिमाणादित्यराहू क्षितौ। ज.का.श्लो.-५४
11. ज.का. श्लो.५५-५९
12. किं चाऽस्मिन् समये विशिष्टमनुजे श्रीगुर्जरे मण्डले भूगुग् बादरसंज्ञितः करिबलः षड्लक्षसैन्योद्धुरः। सामुद्रानपि भूपतीन्निजपदाम्भोजन्मसेवोद्यतान् कुर्वन्मालवदक्षित्तमपतिश्रेण्यर्चितश्चाभवत्।। ज.का.श्लो.६०
13. अन्येद्युः स च भेदपाटधनिकं श्रीरत्नसिंह रणे जित्वा तन्नगरं बभंज हठतः श्रीचित्रकूठा। तत्र क्षतियपुत्रिकाततिरभूद्वह्निप्रवेशाद्रुत पाणाश्चापरमानव भटचयव्यापारितास्त्रात्तया।।ज.का.श्लो.६१
14. तद्दुखादसमाधिवासितहदा श्रीरत्नसिंह क्षमा। पालेनेति हमाउभूमिपतये विज्ञाप्तिराविष्कृता।। साहाय्यं कुरुमें तथा नरपते। दुष्टं यथा न्यायिनं। बध्वा बादरनामकं करतले देहि क्षमस्त्वं यतः।। ज.का.श्लो.६२
15. तस्याभ्यर्थनयेति काबिलपतिः सैन्यावृतो बादर क्षोणीशग्रहणाय बद्धकवचः सद्यश्चचालोद्धतः। दिल्लीतस्तृणवच्च गूर्जरभटांश्चित्ते निजे कल्पयन् दोर्वीर्य निजमग्निवद्धरिहरब्रह्मादिवीर्याधिकम्॥ज.का.श्लो.६३
16. यावच्छ्रीमति चित्रकूटनिकटे दिल्लीपतिश्चागयत् स्तावद्बादरभूपतिर्निजबलाविष्टः प्रनष्टस्तदा गत्वा मालवमण्डलेऽतिगहने कोट्टं दृढं मण्डपा भिख्यं सज्जयति स्म सज्जविभवस्तत् स्पष्टयुद्धासहः॥ ज.का.श्लो.६४
17. जग.का. श्लोक-७१
18. जग.का., श्लोक-७१
19. मत्वा नष्टसमस्तसंपदमसौ जीवन्मृतं बादरं तद्बन्धाग्रहमामुमोच हृदये दिल्लीपतिः शक्तिमान् यद्वायुर्न तृणानि नीचनमनान्युन्मूलयत्युद्धतः सद्यो वृक्षचयं समुच्छ्रिततरं विस्तीर्षाभूच्छायकम्।। ज.का.श्लो. ७२
20. कुत्वा गुर्जरमालवादिकमहादेशेषु सौस्थ्यं पुन र्दिल्यां मुद्गलनायकः शतगुणश्रीवृद्धिमानागतः। एकच्छत्रमकण्टकं सुखभरं राज्यं बभारोत्तरं पुण्ये जाग्रति को न वांछिततर्तिं प्राप्नोति यस्माज्जनः। ज.का.श्लो. ७४
21. अन्येद्युः स सुपर्वपर्वतसमप्रोच्चालयोर्द्ध गतः पश्यन् एवं नगरं विशालनयनः प्रोत्फुल्लचित्ताम्बुजः मत्तुल्योऽयमभूदितीव विधिना स्पर्धिष्णुना पातितः संप्राप्तभ्रमिराशु कालसदनं प्राप्तः पृथिव्यां पतन्।।ज.का.श्लो.७५
22. खद्योता इव तत्र सूरसुभटा अस्तङ्गते भास्करे तस्मिन् कालगृहं गते गतभंयारतत्पुत्रमग्रेसरम्। कृत्वा दुर्वहशस्त्रापाणिपटवो निर्नायकान् मुद्गला नागत्य स्म वितर्जयन्ति हि जयो निनीयकानां कुतः।। ज.का.श्लो.७६
23. यावत्तावदकब्बरो लघुवया अप्युग्रतेजःस्फुर।। अश्रौषीत् स्वपितुर्मृतिं निजभटत्रासं च दस्यूदयम्।। ज.का.श्लो.७८
24. लब्धोऽनेन जयो नृपेण विशदो यस्मिन् महीमण्डले तस्मिन् यावनभाषयाऽक्षरवरं फत्तेपुरं वासितम्। कृष्णेनेव विशालसुन्दरगृहं श्रीद्वारिकानामकं भूपानां स्थितिरेषकैव हि जयस्थाने पुरस्थापनम्।। ज.का.श्लो.८४
25. राज्यं तत्र करोति लब्धविजयः श्रीपातिसाकब्बरः श्रीफत्तेपुरनामके पुरवरे व्यापारिवर्गाश्रिते। ज.का.श्लो.८६